Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 14, (2019) 41-44 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v14i1.6

Theatrical Literature And The Extracts Used In It On "The Mahabharata"

Kusum Dobriyal and J K Godiyal

Department of Sankrit, H N B Garhwal University Campus, Pauri Garhwal -246001, Uttarakhand

*Corresponding Author Email: kusumdobriyal62@gmail.com

Received: 11.10.2019; Revised: 7.11.2019; Accepted: 4.12.2019
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract: The importance of "Mahabharata" has been imbibed by poets and inventors since the primitive era of writing Sanskrit literature. The present communication deals with the analysis of metaphors and extracts presented in the "Mahabharata" composed by "Mahrsi" Ved Vyas.

Keywords: Mahabharat, Theatrical Literature, Extracts, Analysis

महाभारत पर आश्रित नाट्य–साहित्य एवं उसमें प्रयुक्त रस

कुसुम डोबरियाल एवं जयकृष्ण गोदियाल

संस्कृत विभाग, हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल–246001, उत्तराखण्ड

*Corresponding Author Email: kusumdobriyal62@rediffmail.com

Received: 11.10.2019; Revised: 7.11.2019.; Accepted: 4.12.2019
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश

संस्कृत साहित्य लेखन के आदिमयुग से ही कवियों तथा अन्वेषकों द्वारा ''महाभारत'' की महत्ता को आत्मसात किया गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध पत्र में महर्षि वेदव्यास कृत ''महाभारत'' में वर्णित रूपकों तथा उनमें प्रयुक्त मुख्य रसों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

कुंजी शब्द : ''महाभारत'', नाट्य साहित्य, रस, विवेचना।

कृष्ण द्वैपायन 'वेदव्यास' की विश्व विश्रुत कृति 'महाभारत' की महत्ता सर्वविदित है[1]। संस्कृत साहित्य में 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'महाभारत' दो ऐसे ग्रन्थ हैं, जिन्हें अधिकांश संस्कृत साहित्य का उपजीव्य या आश्रय स्रोत माना गया है। यह मान्यता तथ्यानुकूल भी है। इसके प्रतिपादन में अनेक प्रकार के शोध कार्य भी दृष्टिगोचर होते

हैं। महाभारत में वर्णित विषयों की व्यापकता एवं संस्कृत साहित्य के मुख्य स्रोत के कारण ही इसे 'विश्वकोष' भी कहा जाता है। 'महाभारत' को इसके महत्व तथा गुरूत्व के कारण ही महाभारत कहा जाता है। भारतीय संस्कृति, भारतीय साहित्य जीवन एवं दर्शन आदि समस्त विषयों की सांगोपांग विवेचना महाभारत में समुपलब्ध है[2]।

संस्कृत–साहित्य लेखन के आदिमयुग से ही महाभारत की उपरोक्त महत्ता को कवियों द्वारा आत्मसात् व अंगीकार भी किया गया। इसी कारण लौकिक संस्कृत–साहित्य के अविर्भाव काल से ही 'महाभारत' को उपजीव्यता प्राप्त हो गयी। संस्कृत लेखन के द्वारा आदिम युग में ही कवियों ने 'महाभारत' से भिन्न भिन्न विषय लेकर अपने–अपने ढंग से एवं रूचि के अनुसार संस्कृत साहित्य का सृजन किया। साहित्य सृजन की इस परम्परा में लेखकों द्वारा काव्य के उभयभेद श्रव्य एवं दृष्य पर कार्य किया गया है। कुछ कवियों ने 'महाभारत' के कथानकों पर आश्रित श्रव्यकाव्य लिखे तो कतिपय अन्य ने महाभारताश्रित कथानकों पर दृष्यकाव्यों का प्रणयन किया[3]। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के भी 'महाभारत' आश्रित ग्रन्थ देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत संदर्भ में 'महाभारत' पर आश्रित नाट्य साहित्य (रूपकों) का तथा उनमें प्रयुक्त मुख्य रसों का विवेचन ही मुख्य प्रतिपाद्य है।

संस्कृत साहित्य में जो सुप्रसिद्ध कवि हैं, उनके द्वारा महाभारत के विभिन्न प्रसंगों को लेकर जो नाट्यग्रन्थ लिखे गये उनका विवरण तालिका–1 में प्रस्तुत है।

तालिका–1 महाभारताश्रित नाट्यग्रन्थों का विवरण

क्र0सं0	नाट्यकृति का नाम	लेखक
1	पंचरात्रम्	महाकवि भास
2	उरुभंगम्	महाकवि भास
3	कर्णभारम्	महाकवि भास
4	दूत वाक्यम्	महाकवि भास
5	मध्यमव्यायोग	महाकवि भास
6	दूत घटोत्कचम	महाकवि भास
7	वेणी संहार	भट्ट नारायण
8	बालभारत	राजशेखर
9	सुभद्रा–धनंजय	कुलशेखर वर्मन
10	नैषधानन्द	क्षेमीश्वर
11	धनंजय व्यायोग	कंचन पण्डित
12	किरातार्जुनीय व्यायोग	वत्सराज
13	नलविलास	रामचन्द्र
14	निर्भयभीम	रामचन्द्र

तालिका में वर्णित प्रख्यात नाट्य कृतियां महाभारत के विभिन्न प्रसंगों को आधार बनाकर लिखी गयी हैं। ये सभी रचनायें प्राक्तन हैं। प्रधानतया ये सभी कृतियां दृष्य काव्य के अन्तर्गत आती हैं। किन्तु विषयवस्तु, आकार प्रकार, पात्र प्रयोग तथा अन्य नाट्यानुकूल तत्वों की संयोजना की दृष्टि से इन सभी को दृष्यकाव्य की भिन्न भिन्न श्रेणियों[4] में परिगणित किया जाता है। महाभारत के कथानकों पर आधारित इन सभी नाट्यकृतियों में विषयवस्तु एवं पात्र निरूपण में यद्यपि विभिन्नता होना स्वाभाविक है किन्तु रस प्रयोग की दृष्टि से कतिपय रूपकों में समानता है। 'महाभारत' आश्रित उपरोक्त प्रायः समस्त दृष्यकाव्य रौद्र–रस प्रधान ही हैं।

काव्य का अभिनय प्रधान भेद–दृष्काव्य अपनी कतिपय विषेषताओं के कारण सदैव सर्वत्र समादृत रहा है। दृष्यकाव्य का तात्पर्य है जिसे हम (सामाजिक) पढने व सुनने के अतिरिक्त देख कर भी समझ सकें। अर्थात जिसे साक्षात् पढकर व सुनकर समझा जा सकता है तथा देखकर और अधिक सुगमता से समझा जा सकता है और यही साक्षात् अवलोकन का माध्यम इसको काव्य के अन्य भेदों से अलग करते हुए सर्वोत्तम, श्रेयस्कर, विष्वसनीय व प्रभावकारी आदि संज्ञाओं से अलंकृत करता है[5]। समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी इस दृष्यकाव्य में रस प्रयोग के सन्दर्भ में पूर्व से ही अनेक मत मिलते हैं। काव्य की व्याख्या (मीमांसा) करने वाले काव्यशास्त्रियों ने दृष्यकाव्य में आठ काव्य रसों का विधान सुनिष्चित किया है। किन्तु इस सन्दर्भ में पर्याप्त मत मतान्तर भी देखने को मिलते हैं। सामान्यतया आठ रसों के प्रयोग के अनुसार श्रृंगारादि में से कोई एक दृष्यकाव्य का प्रधान रस होता है और अन्य रसों का सहायक रस के रूप में प्रयोग किया जाता है[6]। महाभारत के कथानकों पर आश्रित उपरोक्त लगभग सभी नाट्यकृतियां 'रौद्र–रस' प्रधान दिखलाई पड़ती हैं। इन कृतियों का रौद्र–रस प्रधान होना महाभारत के सन्दर्भ में प्रासंगिक भी लगता है। महाभारत का सामान्य नामोल्लेख होने मात्र से ही कुछ असामान्य होने का अहसास होता है। इस व्यावहारिक धरातल के अतिरिक्त इन सभी नाट्यकृतियों का कथानक परस्पर–बैर, ईर्ष्या, द्वेष, राग छल कपट, क्रोध, मोह इत्यादि मनोभावों की प्रधानता के कारण रौद्ररस को व्याख्यायित करता है। एक दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतिद्वन्दितात्मक प्रवृत्ति रौद्ररस के मूल में कारक होती है[7]।

महाकवि भास की पूर्व उल्लिखित छः नाट्य कृतियां महाभारत के भिन्न भिन्न प्रसंगों को दर्शाती है। पंचरात्र में दुर्योधन की पाण्डवों के प्रति ललकार–

''यत पुरा ते सभामध्ये राज्ये माने च हर्षितः
.....कि रोशो धरिस्तदा''[8]

–रौद्र की अभिव्यक्ति है।

'उरूभंग' में महाबली भीम की उक्ति–

संहृत्य भ्रुकुटीर्ललाटबिवरे स्वेदं करेणाक्षिपन्।
बाहुभ्यां परिगृह्य भीमवदनष्चित्रांगदां स्वां गदाम[9]।

–दुर्योधन को क्रोधपूर्ण ललकार है गदायुद्ध के लिए। इस प्रकार के अनेक प्रसंग यहां रौद्र को अभिव्यंजित करते हैं। इसी प्रकार अन्य रूपकों में भी रौद्ररस की ही प्रधानता है। रौद्ररस के साथ ही प्रसंगानुकूल श्रृंगार, हास्य, वीर आदि रसों का प्रयोग भी भास की नाट्यरचनाओं में दृष्टव्य है।

महाकवि भास के अतिरिक्त 'भट्टनारायण' संस्कृत के ऐसे प्रख्यात नाटककार हैं जिन्होने महाभारत से दुर्योधन एवं भीम के मध्य ख्यात वैर भाव (शत्रुता) को लेकर अपना सुप्रसिद्ध नाट्य वेणीसंहार लिखा। संस्कृत नाट्य जगत में इसका विशेष महत्व है। छः अंकों में विभक्त इस कृति में दर्शाया गया है कि दुशासन और दुर्योधन के द्वारा किये गये दुर्व्यवहार से दुखित द्रोपदी प्रतिज्ञा करती है कि वह अपनी बालों की (चोटी) वेणी तभी संवारेगी जब भीम उन दोनों का वध कर देंगे। द्रोपदी की इसी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने की संकल्पना के उद्देश्य से ही भट्टनारायण ने अत्यन्त रोमांचक एवं नाटकीय शैली में इस दृष्यकाव्य का प्रणयन किया है। कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य श्रीकृष्ण द्वारा किये जा रहे सन्धि प्रयास की घटना से इस नाट्य का प्रारम्भ होता है और युधिष्ठिर के राज्याभिषेक पर नाटक पूर्ण होता है। नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों का इसमें सफल प्रयोग दर्षनीय है। श्रीकृष्ण द्वारा आयोजित सन्धिप्रस्ताव की सूचना से क्रोधित भीम की गर्वोक्ति वीररस की अपेक्षा रौद्ररस की अभिव्यंजना में सफल रही है।

स्वस्था भवन्ति आर्य जीवति धार्तराष्ट्राः[10]।
(क्या मेरे जीते जी कौरव स्वस्थ रहेंगे)

ऐसे उदाहरण अन्यत्र भी हर्ष मिश्रित रोमांच से भरे पड़े है[11]। ये सभी सन्दर्भ वीर आदि की अपेक्षा रौद्ररस को ही पुष्ट करते हुए दिखलाई पड़ते हैं। वेणी संहार की मान्यता वीररस प्रधान भी कही जाती है। किन्तु इसमें उत्साह से अधिक ईर्ष्या व प्रतिद्वन्दिता के होने से रौद्ररस की स्थिति ही सैद्धान्तिक है।

श्राजशेखर विरचित 'बालभारत' में महाभारत में वर्णित द्रोपदी स्वयंवर, द्यूतक्रीड़ा आदि प्रसंगो का अत्यन्त रोचक वर्णन किया गया है। इसमें भी नाट्यानुकूल सभी तत्व सन्निदिष्ट हैं, अन्य रसों की सहज अनुभूति है[12]। तथापि द्यूतक्रीड़ा में युधिष्ठिर द्वारा सब कुछ हारना, द्रोपदी का अपमान, द्रोपदी द्वारा प्रश्न करना, सभा का मौन रहना और भीम द्वारा कौरवों के समूल वध की प्रतिज्ञा रौद्र रस की भूमि है।

इन सुप्रसिद्ध महाभारताश्रित रूपकों के अतिरिक्त जिन नाट्यरचनाओं का पूर्व में उल्लेख किया गया है यथा–सुभद्राधंनजय, नैषधानन्द, धनंजयव्यायोग आदि सभी महाभारत के छिटपुट कथानकों पर अवलम्बित हैं। इनमें भी सर्वत्र प्रधानता रौद्ररस की ही है। इस विवेचना से स्पष्ट है कि महाभारत को आश्रय बनाकर नाट्य सहित्य भले ही जिसने भी लिखा हो, उसमें प्रधानता रौद्ररस की ही दिखलाई पड़ती है।

सन्दर्भ सूची

1. धर्मे त्वर्थे च कामेच मोक्षे च भरतर्षभ।
   यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।। महाभारत
2. यथा समुद्रो भगवान् यथा हि हिमवान् गिरिः
   ख्यातावुभो रत्ननिधी तथा भारतमुच्यते।। महाभारत
3. संस्कृतसाहित्य का इतिहास, हिन्दी सा0 भण्डार दिल्ली, 1969 पेज 35–36
4. नाटकं सप्रकरणं भाणः पहसनं डिमः।
   व्यायोग....। दशरूपक, 1/8
5. काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला–अभिज्ञानषाकुन्तलं
6. श्रृंगार हास्य करूण रौद्र....। काव्यप्रकाश 4/29
7. विभावैरनुभावश्च स्वोचितैर्व्यभिचारिभिः।
   क्रोधः सदस्यरसस्यत्वं नीतो रौदइतीर्यते'' रसार्णवसुधाकर पृ0 243–245
8. पंचरात्रम् 1/37
9. उरूभंगम् 1/23
10. वेणीसंहार, 1/8
11. वेणीसंहार, 1/2, 1/15, 1/17
12. बालभारत, 2/4